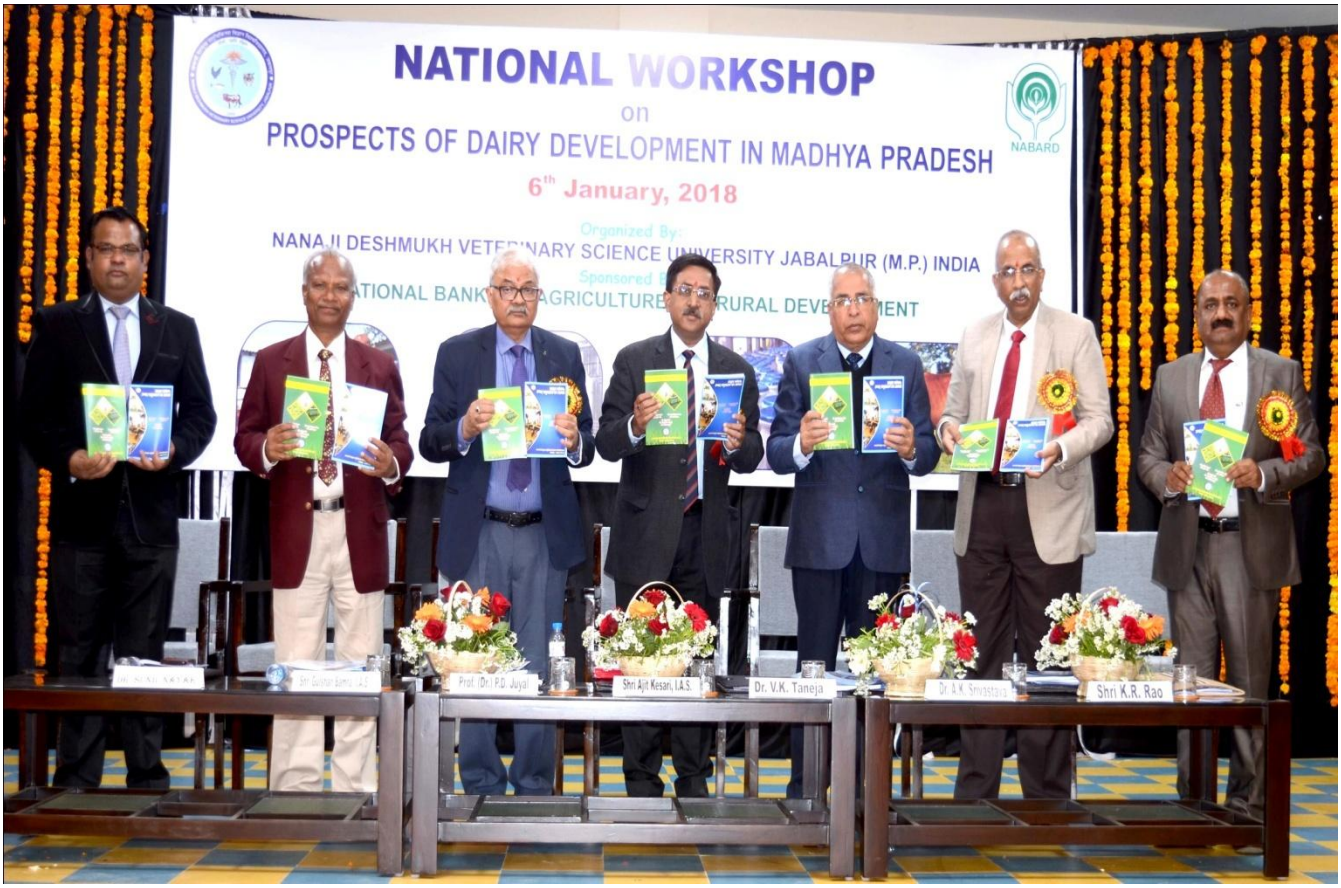

प्रदेश में डेरी विकास की अपार संभावनाएँ– अजीत केसरी

आज नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय जबलपुर में प्रदेश में डेरी विकास की संभावनाएँ विषय पर एक राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ श्री अजीत केसरी आई.ए.एस. प्रमुख सचिव पशुपालन विभाग, मध्यप्रेदश शासन, भोपाल के मुख्य आतिथ्य डॉ व्ही.के.तनेजा पूर्व कुलपति एवं डिप्टी डायरेक्टर जनरल भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली , डॉ. ए.के. श्रीवास्तव चेयरमेन एग्रीकल्चर सांइटिस्ट रिक्रूटमेंट बोर्ड, नई दिल्ली, श्री के.आर.राव, चीफ जनरल मैनेजर नाबार्ड, भोपाल के विशिष्ट आतिथ्य तथा डॉ. प्रयाग दत्त जुयाल माननीय कुलपति की अध्यक्षता में संपन्न हुआ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री अजीत केसरी ने कहा कि भारत वर्ष में दुग्ध उत्पादन में मध्यप्रदेश का तीसरा स्थान है। पशुओं की कुल संख्या 2.7 करोड है। जनसंख्या के अनुपात में दुग्ध उत्पादन कम है, यदि हम प्रति पशु दुग्ध उत्पादन बढ़ाने का प्रयास करें, तो हम प्रथम स्थान पर पहुँच सकते हैं। यदि हम पशुपालक की आर्थिक स्थिति में सुधार चाहते हैं, तो हमें दुग्ध उत्पादन की लागत कम करना होगा। प्रति पशु की दुग्ध उत्पादन क्षमता बढ़ानी पडेगी। दुग्ध का संग्रहण एवं विक्रय की स्थिति को सुधारना होगा, उन्होंने पशुचिकित्सकों से आह्वान किया वे स्वयं डेरी फार्मिंग शुरू करें जिससे अधिक गुणवत्ता पूर्ण दुग्ध उत्पादन कर सकें। डेरी उद्योग हेतु मध्यप्रदेश सरकार सब्सिडी एवं

ऋण प्रदान कर रही है। प्रदेश में 85 प्रतिशत गायें नॉन डिस्क्रिप्ट है हमें देशी गायों में नस्ल सुधार करना होगा।

श्री केसरी द्वारा निरीक्षणः– इसके अतिरिक्त श्री अजित केसरी द्वारा पशुचिकित्सा महाविद्यालय अस्पताल, पंच गव्य उत्पादन इकाई तथा स्कूल ऑफ वाईल्डलाईफ फॉरेंसिक एण्ड हैल्थ का निरीक्षण किया गया।

विशिष्ट अतिथि डॉ. व्ही.के. तनेजा ने कहा कि हमें कृषकों की आय को वर्ष 2022 तक दोगुना करने हेतु पषुपालन एवं हार्टिकल्चर पर अधिक ध्यान देना होगा। श्री के.आर. राव ने नेशनल बैंक फॉर एग्रीकल्चर एण्ड रूरल डेव्हलेपमेंट (नाबार्ड) द्वारा विभिन्न प्रकार की योजनाओं हेतु वित्तीय सहायता के बारे में विस्तार से बताया।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि एवं वक्ता श्री ए.के. श्रीवास्तव ने बताया कि यदि हम देशी गायों का प्रबंधन उचित ढंग से करें जिससे कम खर्च में अधिक लाभ कमा सकते हैं।

दीर्घायु हैं देषी गायेंः– उन्होंने बताया कि देशी गायों का प्रदर्शन एवं कार्यक्षमता अधिक होती है। इनमें विदेशी गायों की तुलना में अधिक प्रतिरोधक क्षमता होती है।

प्रदेश में भैंसों द्वारा अधिक उत्पादनः–मध्यप्रदेश के कुल दुग्ध उत्पादन में भैसों द्वारा 46 प्रतिशत, देशी गायों द्वारा 37 प्रतिशत, क्रास ब्रीडिंग द्वारा 12 प्रतिशत तथा बकरियों द्वारा 05 प्रतिशत होता है।

डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि पशुओं द्वारा मनुष्यों में ट्यूबरक्लोसिस का संक्रमण 28 प्रतिशत पाया गया है।

उत्तम सांड़ों की आवश्यकताः–कम उत्पादन वाली देशी गायों का उत्तम नस्ल के सांड़ों के वीर्य द्वारा कृत्रिम गर्भाधान कराने की आवश्यकता है।

ए–1 एवं ए–2 मिल्कः– डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि अनेक शोधों के आधार पर यह प्रमाणित हो चुका है कि देशी पशुओं का ए–2 मिल्क बहुत अच्छा है। शोधों के आधार पर यह भी सिद्ध हो चुका है कि विदेशी गायों का ए–1 मिल्क नुकसानदेय नहीं है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति डॉ. प्रयागदत्त जुयाल ने विश्वविद्यालय द्वारा किये जा रहे शिक्षण, अनुसंधान एवं विस्तार कार्यों की जानकारी दी। उन्होंने मिश्रित खेती जिसमें कृषि, पशुपालन, मुर्गीपालन, बकरीपालन एवं मत्स्य पालन का समावेश हो, उसे लाभकारी बताया। उन्होंने कहा कि हमारे प्रदेश में दुग्ध उत्पादन तो बहुत हो रहा है, परंतु इसकी प्रोसेसिंग उत्तम तरीके से नहीं हो पा रही है, विक्रय भी उचित ढंग से नहीं हो पा रहा है। जिससे पशुपालक को अधिक लाभ नहीं मिल पा रहा है।

प्रत्येक पशु उत्पाद का उपयोगः—यदि हम पशु के प्रत्येक उत्पाद जैसे गोबर एवं मूत्र का समुचित उपयोग करें तभी ज्यादा आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

फूड टेक्नोलॉजी एवं डेरी साईंस कालेज की आवश्कताः— यदि हम कालेज शुरू कर दें, तो प्रदेश के लिए इसके विशेषज्ञ उपलब्ध करा सकते हैं। जिससे मिल्क प्रोसेसिंग एवं गुणवत्ता में सुधार हो सके।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्जवलन, सरस्वती वंदना एवं विश्वविद्यालय गीत से हुआ। स्वागत उद्‌बोधन कार्यशाला के संयोजक डॉ. सुनील नायक द्वारा किया गया।

राष्ट्रीय कार्यशाला में व्याख्यान

डॉ. पी.एस. बिरथाल नेशनल प्रोफेसर, एन.आई.ए.आई. एवं पी.आर.भारतीय कृषि अनुसंधान नई दिल्ली ने डेरी विकास की संभावनाओं डॉ. ए.के. मकवाना, हेड डेरी बिसनेस मैनेजमेंट एस.एम.सी. कालेज ऑफ डेयरी साईंस आनंद ने प्रास्पेक्टस ऑफ डेयरी प्रोसेसिंग सेक्टर इन इंडिया, डॉ. ए.के. सिंग प्रिंसिपल साइंटिस्ट्स डेयरी टेक्नोलॉजी डिविजन, एन.डी.आर.आई. करनाल, ने '' प्रास्पेक्टस ऑफ डेयरी टेक्नोलॉजी इन इंडिया, प्रोसेसिंग एण्ड वेल्यु एडिसन, डॉ. पी.के. सिंह, कॉलेज ऑफ डेयरी साईंस एण्ड टेक्नोलॉजी, गडवासु लुधियाना ने मिल्क प्रोसेसिंग इनक्रीजिंग प्राफिट थ्रो वैल्यु एडिसन, तथा डॉ. एस. के. राय, पूर्व डीन फैकल्टी , कॉलेज ऑफ डेयरी एण्ड फूड टेक्नोलॉजी ,एस.डी.ए. यू. एस. के नगर गुजरात ने डेयरी डेव्हलेपमेंट इन इंडिया विथ स्पेशल रिफेरेंस टू मध्यप्रदेश विषय पर अपने व्याख्यान प्रस्तुत किये।

इसके अतिरिक्त डॉ. सुनील नायक, डॉयरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन ने प्रास्पेक्ट ऑफ डेयरी डेव्हलपमेंट इन मध्यप्रदेश विषय पर व्याख्यान दिया।

राष्ट्रीय कार्यशाला में डॉ. एस.एन.एस. परमार, डॉ. आर.पी.एस. बघेल, डॉ. वाय.पी. साहनी. डॉ.ओ.पी. श्रीवास्तव, डॉ. जी.पी. मिश्रा. डॉ. एच.के.बी. पारेख, डॉ. मधु स्वामी, डॉ. आर.के शर्मा, डॉ. एस.पी.शुक्ला, डॉ. एम.के. मेहता, डॉ. एस.के.जोशी, डॉ. आर.के.शर्मा, डॉ. जे.के.भारद्वाज, डॉ. अपराशाही, डॉ. पी.सी.शुक्ला, डॉ. एन.के. जैन, डॉ. जी.पी.पाण्डेय, डॉ. जी.पी. लखानी, डॉ. बी.सी. सरखेल, डॉ. जी.दास, डॉ. एस.एन. शुक्ला, डॉ. बी.राय, डॉ. के. पी. सिंह, समस्त प्राध्यापकों एवं छात्रों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. जॉयसी जोगी एवं डॉ. आदित्य मिश्रा तथा आभार प्रदर्शन डॉ. आर.पी.एस. बघेल द्वारा किया गया।

डॉ. ओ.पी. श्रीवास्तव
सूचना एवँ जनसंपर्क अधिकारी
ना.दे.प.चि.वि.वि., जबलपुर (म.प्र.)